राज्य अध्याय 40

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यिर्मयाह 15,17,18 और 23**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 15,17,18 और 23) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[परमेश्वर के संसाधन]*** **(4) याकूब 1:5**

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5. पर यदि तुम से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 12:1-21**

परिचय। **रोमियों 12:1-21** का एक साथ अध्ययन करने के लिये बाइबल के पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

यद्यपि रोमियों की सम्पूर्ण पुस्तक मसीही सिद्धांत और अभ्यास से भरी हुई है, रोमियों अध्याय 1-11 सिद्धान्तों और *रोमियों* के अध्याय 12-16 *अभ्यास* पर ज़ोर डालते हैं।

अध्याय 12 का विषय *पवित्रीकरण* है। रोमियों अध्याय 6 में हमें पहले से ही शिक्षा दी गई है कि धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के लिए आधार यीशु मसीह के साथ उसकी मृत्यु और जी उठने में आत्मिक सम्बन्ध है (रोमियों 6:2-7; तुलना करें 1कुरिन्थियों 1:30 से)। धर्मी ठहराए जाने की मांग पवित्रता की नैतिक *(पद) स्थिति* के बिना हम अपनी व्यक्तिगत शैली (प्रक्रिया) में उन्नति नहीं कर सकते! और पवित्रीकरण के बिना हम अपने धर्मी ठहराए जाने के विषय में कभी भी निश्चित नहीं हो सकते! क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थायी है और पवित्रीकरण में उन्नति करना एक मसीही के भीतर निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है (रोमियों 6:10-11)। यीशु मसीह के साथ आत्मिक सम्बन्ध का अर्थ है कि किसी व्यक्ति ने यीशु मसीह से उसके हृदय और जीवन में वास करने की प्रार्थना की है। इसका अर्थ है कि उस

मसीही जन की देह में पवित्र आत्मा उपस्थित है। पवित्र आत्मा मसीह की आत्मा, उस जी उठे और स्वर्ग पर चढ़ गए और ऊँचे पर उठाए हुए प्रभु की आत्मा से जो वर्तमान में स्वर्ग में शासन करता है कुछ भी कम नहीं है (रोमियों 8:9-10)। ऐसे मसीही जन का व्यावहारिक और संजातीय जीवन मसीह की छुटकारा प्रदान करने वाली उपलब्धि की ठोस बुनियाद पर स्थिर करता है। पवित्रीकरण में उन्नति इसलिए संभव होती है क्योंकि वह मसीही जन मसीह से सम्बन्धित है और पवित्र आत्मा के माध्यम से उस मसीही के नए जीवन में मसीह कार्य करता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 12:1-21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

12:1

खोज 1. **अपनी देह के प्रति मसीही जन की जिम्मेदारी।**

मसीही जन की देह पवित्रीकरण का एक महत्वपूर्ण भाग है। वचन 1 कहता है, "हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" संसार में पाए जाने वाले कई धर्म देह को तुच्छ मानते हैं और देह को बुराई का रूप समझते हैं। देह और उसके अपमानजनक प्रभावों से स्वतंत्र होना ही उनका संजातीय आदर्श है। इसके विपरीत, मसीही विश्वास में मानव देह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उत्पत्ति के समय से ही, मानव की देह उसके अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है (इब्रानी में: उसका प्राण), अर्थात, जिसके कारण से उसे मानव का रूप प्राप्त हुआ है (उत्पत्ति 2:7,21-23)। मनुष्य के जीवन के अंत में पाप के प्रभाव से देह मर जाती है। तथापि, इसे असामान्य समझा गया है, क्योंकि परमेश्वर की मंशा सारी देहों को पुनर्जीवित करने की है (दानिय्येल 12:2; फिलिप्पियों 3:20-21)।

क्योंकि मसीही जनों की देह पवित्र आत्मा का मंदिर है, इसलिए एक मसीही जन अपनी देह के सब सदस्यों को धार्मिकता के उपकरणों के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर देता है (रोमियों 6:13,19)। एक मसीही जन अपने शरीर को परमेश्वर को *जीवित बलिदान* के रूप में चढ़ाता है, जिसका अर्थ है कि वह परमेश्वर और उसकी सेवा के पुनर्जीवित करने वाले स्वभाव को अपनी देह को जानबूझकर और लगातार एक उपकरण के रूप में समर्पित करता है। वह अपने शरीर को परमेश्वर को एक *पवित्र*

बलिदान के रूप में चढ़ाता है, जिसका अर्थ है उसे बुराई से पृथक कर देना (उदाहरण के लिए, कामुक वासना) और भलाई के प्रति समर्पित कर देना। और वह अपने शरीर को परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाता है, जो परमेश्वर की महिमा करने के द्वारा उसे आनन्द प्रदान करता है। देह के ऐसे चढ़ावे को "आत्मिक आराधना" कहा गया है (यूनानी में: लोजिकेन लात्रेइयन), जिसका अर्थ है, कि अन्यजातियों और यहूदियों के विपरीत मसीही जन बाहरी और यांत्रिकी संस्कारों (रीतियों) के माध्यम से आराधना नहीं करता है, परन्तु विवेक, समझ और अपनी देहों (जीवनों) के पवित्र समर्पण के माध्यम से।

12:2

***खोज 2.* अपने मन के प्रति मसीही जन की ज़िम्मेदारी।**

मसीही जन का मन या सोचने का तरीका (यूनानी में: नोउस) परिवर्तन (बदलाव) की कुंजी है। वचन 2 कहता है, "इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम कर करते रहो।" व्यावहारिक मसीही जीवन जीने के लिए, मसीही जन के पास एक मानक होना अवश्य है। उसका यह मानक पापी संसार, कोई धार्मिक अगुवा या इस संसार का कोई धर्म नहीं होना चाहिए! उसका यह मानक बाइबल के परमेश्वर से कम कुछ भी नहीं होना चाहिए जिसने अपने आप को यीशु मसीह के जीवन के प्रेम के द्वारा प्रकट किया (इफिसियों 5:1-2) और जिस प्रकार से उसकी सिद्ध इच्छा बाइबल में दर्ज की गई है। वचन 2 अपने में एक नकारात्मक और एक सकारात्मक आदेश और एक वाचा को रखता है।

(1) नकारात्मक आदेश।

"*कभी भी* सदृश्य *न हों* (यूनानी में: सुसचेमातिज़ोमै) (आदेश, वर्तमान निरंतर काल)!" यह बुरे लोगों या प्रभावों की सादृश्यता से बचे रहने के विषय में बताता है। "अपने आप को इस बुरे युग के चाल चलन में ढल जाने की अनुमति मत दो।"

उसी प्रकार से, कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे मसीहियों को अवश्य ही बचना चाहिए! उदाहरण के लिए, बाइबल सिखाती है कि मसीहियों को आक्रामक भाषा बोलने, अपमानजनक गीत गाने, गंदी पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ने, अनैतिक फिल्में देखने, ललचाने वाले कपड़े पहनने, संदिग्ध खेलकूद में शामिल होने, और तथाकथित मित्रों की नास्तिकता और दुष्टता का अनुसरण करने से बचना चाहिए। मसीही विश्वास का प्रथम सबूत पाप से फिर जाना है (1थिस्सलुनीकियों 1:9)! इस अस्थायी, क्षणिक बुरे युग के द्वारा एक मसीही जीवन को निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए (1यूहन्ना 2:17; 1 कुरिन्थियों 2:6,8)। बजाए इसके, आने वाले युग के द्वारा उसकी योजनाओं और महत्वाकांक्षाओं को निर्धारित किया जाना चाहिए! उसे ऐसे प्रतिमानों को विकसित करना चाहिए जो वर्तमान युग में बने रहें और आने वाले युग में भी लगातार बने रहेंगे!

(2) सकारात्मक आदेश।

"बदलते जाओ (यूनानी में: मेटामोरफूमै) (आदेश, वर्तमान निरंतर काल, निष्क्रिय)! यह भीतरी बदलाव के विषय में बताता है जो कि *अनन्त* बदलाव की ओर अगुवाई करता है। "अपने मन के नए हो जाने के द्वारा अपने आप को बदलने की अनुमति प्रदान करो।"

उसी प्रकार से, कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनका मसीहियों को अवश्य ही अनुसरण करना चाहिए! उदाहरण के लिए, मसीहियों को सक्रियता के साथ बदलाव की खोज करनी चाहिए, अपने मनों को परमेश्वर के वचनों से भरना चाहिए और इस बात की

इच्छुक होना चाहिए कि उनको बदलने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का उपयोग करता है। उनको लगातार अपने स्वयं के विवेक, मान्यताओं और धारणाओं को वापस बाइबल स्कूल भेजना चाहिए और पवित्र आत्मा की ओर से निर्देश प्राप्त करने चाहिए। उनको इस बात की जाँच करनी चाहिए कि क्या उनकी धारणाएँ बाइबल के साथ अनुरूपता में हैं। यह सकारात्मक आदेश उस उपलब्धि की स्थिरता, शालीनता और अभिमान पर प्रहार करती है जो अकसर मसीहियों की विशेषता होती है। पौलुस सामान्य रूप से एक वार्तालाप या दूसरी आशीष के अनुभव की नहीं, परन्तु एक स्थिर नयेपन की शिक्षा दे रहा है!

(3) वाचा।

जब मसीही जन इसे करते हैं, तो वे इस अनुभव से होकर गुजरेंगे कि परमेश्वर किस तरह का जीवन चाहता है कि वे जीएँ। मसीही के जीवन की पवित्रता, न्याय और भलाई परमेश्वर की इच्छा का एक प्रतिबिम्ब होगा।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 12:1-21 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

12:3

प्रश्न 1. **वचन 3 का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें।

रोमियों 12:3 कहता है, "क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिणाम के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।"

मसीह की देह में पाए जाने वाले मसीहियों के मध्य में मौजूद बातों के विषय के बजाए पौलुस भिन्नताओं के बारे में बताता है। मसीहियों के मध्य में परमेश्वर ने कम से कम तीन भिन्नताओं को अनुमति प्रदान की है:

- वचन 3 के अनुसार, मसीहियों को अलग अलग माप का विश्वास प्राप्त होता है
- वचन 4 के अनुसार, मसीहियों के कलीसिया में अलग अलग कार्य होते हैं
- वचन 6 के अनुसार, मसीहियों को अलग अलग आत्मिक वरदान प्रदान किए गए हैं।

परमेश्वर की सर्वोत्तम इच्छा मसीहियों के मध्य में इन भिन्नताओं को निर्धारित करती है और उसी तरह से उनके पवित्रीकरण (व्यक्तिगत विकास) और उनकी सेवा (मसीह के लिए) की दिशा को भी।

(1) अतिश्योक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान पाप है।

"जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़ कर कोई भी अपने आप को न समझे"। परमेश्वर मसीही जन को कलीसिया में उनके महत्व को अधिक आँकने के पाप के खिलाफ चेतावनी देता है। लालच या कलीसिया में किसी आत्मिक वरदान को अभ्यास में लाने में निहित अभिमान उससे सम्बन्धित नहीं है। ऐसे मसीही जन जिनको कलीसिया में कोई आत्मिक वरदान या कार्य नहीं मिला है जो परमेश्वर द्वारा उनको प्रदान किए गए उस विश्वास के माप से मेल खाता है वे अभिमान या अतिश्योक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान के पाप में लिप्त हैं।

(2) झूठी विनम्रता पाप है।

"पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिणाम के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।" हालाँकि उसे अपने आप को उन वरदानों को पाने वाला नहीं समझना चाहिए जो उसके पास नहीं हैं, उसे उस वरदान या उन वरदानों को मान लेने से इनकार नहीं करना है जो उसे मिले हैं। झूठी विनम्रता भी पाप है।

(3) विश्वास का माप।

"माप" शब्द मापे जाने के परिणाम को संदर्भित करता है, अर्थात एक *निश्चित मात्रा* या *एक निश्चित प्रकार* जिसे मापा गया है। उसी प्रकार से यह उस विश्वास की मात्रा का संदर्भ देता है जिसे मापा गया है। तथापि, इफिसियों 4:7 की अनुरूपता में विश्वास के प्रकार, अर्थात, आत्मिक वरदान के प्रकार (उदाहरण के लिए, शिक्षा प्रदान करने की क्षमता) या कार्य का प्रकार (उदाहरण के लिए, बच्चों के शिक्षक) पर अधिक बल दिया गया है कि परमेश्वर अपनी सम्प्रभुता में प्रत्येक मसीही का माप लिया है। विश्वास के अलग अलग मापों का अर्थ वे अलग अलग तरीके हैं जिनसे मसीही जन अपने अलग अलग आत्मिक वरदानों और कलीसिया में पाए होने वाले अलग अलग कार्यों में अपने विश्वास का प्रदर्शन और अभ्यास करते हैं।

विश्वास के उदाहरण जिनको मसीहियों के लिए मापा गया है वह वरदानों और कार्यों की विविधता है जिसका उल्लेख वचन 6-8 में किया गया है। प्रत्येक मसीही जन को उसकी ही माप प्राप्त होता है, अर्थात, वह आत्मिक वरदान और वह कार्य जिसे परमेश्वर ने अपनी सम्प्रभुता में कलीसिया की सेवा के दृष्टिकोण से उसे सौंपा है (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 12:11 से)। और सौंपे गए आत्मिक वरदान और कार्य से परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा प्रत्येक मसीही जन को अपने विश्वास का प्रदर्शन और अभ्यास करना चाहिए।

"विश्वास" की आवश्यकता केवल उस समय ही नहीं होती है जब हम कलीसिया के सदस्य बनते हैं। कलीसिया के सदस्य के रूप में हमारे अलग अलग कार्यों का निष्पादन करने के लिए भी विश्वास की आवश्यकता होती है। सारे ही आत्मिक वरदानों और कार्यों का यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा (रोमियों 12:3; फिलिप्पियों 4:13) और दूसरों के प्रति प्रेम के द्वारा (1 कुरिन्थियों 13:1-13) ही अच्छी तरह से अभ्यास किया जा सकता है। यह तथ्य कि कलीसिया में पाए जाने वाले वरदानों और कार्यों को मापा गया है (इफिसियों 4:7), इसका अर्थ है कि प्रत्येक आत्मिक वरदान की कार्य के प्रकार के रूप में और उस क्षेत्र में सीमाएँ होती हैं जिसमें उसका अभ्यास किया जाना चाहिए।

12:4-8

प्रश्न *2*. कलीसिया में मसीहियों की क्या जिम्मेदारी है?

ध्यान दें।

(1) एक आत्मिक वरदान की परिभाषा।

एक आत्मिक वरदान एक विशेष परमेश्वर प्रदत्त *अभिलाषा, क्षमता या कार्य* है। 1 कुरिन्थियों 12:4-7 के अनुसार, एक आत्मिक वरदान मसीही जन के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य, बुद्धि या अनुग्रह की एक अभिव्यक्ति है और यह अलग अलग प्रकार की सेवकाइयों में अपने आप ही प्रदर्शित होती है।

(2) आत्मिक वरदानों का उद्देश्य।

प्रत्येक मसीही जन का कर्तव्य उस आत्मिक वरदान या कार्य के द्वारा परमेश्वर के सेवा करना है जो परमेश्वर ने उसे सौंपा है। मानवीय देह के बहुत सारे अंग हैं और हर एक अंग का मानवीय देह में एक अलग, तौभी आवश्यक कार्य है। उसी प्रकार से, सारे मसीही जन मिल कर मसीह की देह का निर्माण करते हैं और एक आवश्यक कार्य के साथ प्रत्येक मसीही जन उस देह का एक अंग है।

मसीही जन एक दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:5; इफिसियों 4:25)। प्रत्येक मसीही जन को उसे प्राप्त हुए आत्मिक वरदान के द्वारा दूसरे मसीही जन की सेवा करनी चाहिए (1 पतरस 4:10)।

(3) आत्मिक वरदानों के प्रकार।

1कुरिन्थियों 12:28 सिखाता है कि तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण आत्मिक वरदान अथवा कार्य यह हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरा, भविष्यद्वक्ता और तीसरा शिक्षक। रोमियों 12:6-8 भविष्यद्वाणी का उल्लेख सबसे पहले इसलिए करता है, क्योंकि वहाँ रोम में कोई भी प्रेरित नहीं था (रोमियों 15:15-29, विशेष रूप से 20 वचन, प्रेरित पौलुस ने किसी अन्य प्रेरित की नींव पर निर्माण नहीं किया था)।

रोमियों 12:6-8 में दिए गए आत्मिक वरदानों या कार्यों में कोई पद प्रदान करने का आशय नहीं है। रोमियों 12:6-8 में, प्रथम चार आत्मिक वरदान उस क्षेत्र से सम्बन्धित हैं जिसमें उस वरदान का अभ्यास किया जाना है। उदाहरण के लिए, शिक्षा प्रदान करने की क्षमता का अभ्यास शिक्षा के क्षेत्र में किया गया है (उदाहरण के लिए: बच्चे, युवा, वयस्क या विक्लांग)। इसी तरह से भविष्यद्वाणी करने, सेवा करने और प्रोत्साहित करने के साथ भी।

अंतिम तीन आत्मिक वरदान हृदय और इच्छा की प्रकृति से सम्बन्धित हैं जिसके साथ सभा को प्रतिपादित किया गया है। दूसरों की आवश्यकताओं में योगदान देना उदारता के साथ किया जाना चाहिए (यूनानी में: हेपलोतेस)। अगुवाई करना (शाब्दिक रूप से: सबसे आगे जाना) लगन अथवा समर्पण के साथ किया जाना चाहिए (यूनानी में: स्पोउडे)। और दया का प्रदर्शन आनन्दपूर्वक किया जाना चाहिए (यूनानी में: हिलोरोतेस)। ध्यान दें। "भविष्यद्वाणी" शब्द का अर्थ "पूर्व कथन कहना", "घोषणा करना" है।

12:6

***प्रश्न 3.* भविष्यद्वाणी करने का मसीही वरदान क्या है?**

ध्यान दें। "भविष्यद्वाणी" शब्द का अर्थ "पूर्व कथन कहना", "घोषणा करना" है। परमेश्वर की ओर से सत्य के प्रकाशनों द्वारा

बात करने की क्षमता या कार्य को भविष्यद्वाणी कहते हैं (प्रेरितों के काम 2:16-17; 21:10-11)।

(1) प्रारंभिक कलीसिया में भविष्यद्वाणी।

प्रारम्भिक मसीही कलीसिया में, नये नियम के पूरे होने से पूर्व, नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं की सच में आवश्यकता थी। मसीही जनों को लिखा हुआ नया नियम प्राप्त नहीं हुआ था और इसी कारण से उन लोगों पर अपने सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर ने नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं का उपयोग किया। नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने विशेष रूप से इस बात को प्रकट किया कि परमेश्वर उन मसीही जनों से क्या चाहता था कि वे वर्तमान समय में किस प्रकार का मसीही जीवन जीएँ। कई बार उन्होंने इस बात को प्रकट किया कि कुछ मसीही जनों के साथ भविष्य में क्या होगा (प्रेरितों के काम 21:10-11)। मसीहीयत का इतिहास यह प्रदर्शित करता है कि जब तक कि नया नियम पूरा नहीं हो गया था, तब तक नये नियम के भविष्यद्वक्ता लगातार अस्तित्व में रहे।

नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को "विश्वास के अनुपात में" भविष्यद्वाणी करनी थी (यूनानी में: काता तेन अनालोजिअन तेस पिस्तिओस) (वस्तुनिष्ठ सम्बन्धकारक: विश्वास की मसीही देह, जिसमें परमेश्वर चाहता है कि मसीही जन विश्वास करें, रोमियों 1:5; गलातियों 1:23; 1 तीमुथियुस 1:19; 4:1,6; 6:10,21)। इसका अर्थ है कि उनको प्रकट किए गए मसीही विश्वास की सीमा तक ही सीमित अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास करना था (मसीही सिद्धांत, बाइबल) (यिर्मयाह 23:21-22; प्रेरितों के काम 20:27)। "यीशु की गवाही (उदाहरण के लिए यीशु के माध्यम से तथा यीशु के बारे में) भविष्यद्वाणी की आत्मा (सुगंध) है" (प्रकाशितवाक्य 19:10), अर्थात, जो कुछ भी यीशु मसीह ने प्रकट किया (सिखाया) था और विशेष रूप से उस बारे में जो उसने अपने बारे में पुराने नियम के प्रकाशन में (1 पतरस 2:9-12; 2 पतरस 1:21) और नये नियम के प्रकाशन में (यूहन्ना 16:13-15) प्रकट किया था उस तक ही सीमित होकर उनको अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास करना था। निश्चित रूप से उनको अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास वहाँ तक ही सीमित होकर करना था जिसके लिए वे यह विश्वास करते थे कि वह सुनने वालों (मसीही अभ्यास) के लिए अच्छा (लाभकारी) था (यूनानी में: समफेरोन) (प्रेरितों के काम 20:20)।

(2) बाइबल के सिद्धांत के बंद होने के बाद की भविष्यद्वाणी।

बाइबल के सिद्धांत (बाइबल की 66 पुस्तकें) के बंद होने के बाद, किसी को भी बाइबल की अंतर्वस्तु में कुछ भी जोड़ने की अनुमति नहीं दी गई थी। प्रकाशितवाक्य 22:18-19 चेतावनी देता है, "यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।" भविष्यद्वाणी करने का वरदान पाए हुए मसीही जनों को परमेश्वर का वचन पहले से ही ऐसे बोलना चाहिए जैसा कि उसे बाइबल में प्रकट किया गया है, चाहे इसमें अतीत, वर्तमान या भविष्य का सत्कार हो। परन्तु वे बाइबल में "जो लिखा है उससे बाहर न जाएँ" (1 कुरिन्थियों 4:6)।

भविष्यद्वाणी करने का वरदान पाए हुए मसीही जनों को जो वे बोलते हैं उसका 100% जिम्मेदार रहना है, क्योंकि उनका मानवीय आत्मा उनकी नियंत्रण के अधीन रहता है (1 कुरिन्थियों 14:32)। अन्य मसीही जनों को अवश्य ही इन मसीही जनों के शब्दों को लिखे हुए वचन (बाइबल) के मानदंड के प्रकाश में जाँचना (मूल्यांकन करना) चाहिए जैसा कि प्रेरितों के काम 17:11 और 1 कुरिन्थियों 14:29 स्पष्ट रूप से सिखाते हैं: "अन्य लोग (जो बाइबल का प्रचार करते हैं) ध्यानपूर्वक उस बात की जाँच करें जो कहा गया है।"

12:10

प्रश्न 4. **मसीही जन स्वयं से बढ़ कर एक दूसरे का आदर कैसे करते हैं?**

ध्यान दें।

क्योंकि मसीही कलीसिया में अलग अलग माप का विश्वास, अलग अलग प्रकार के आत्मिक वरदान और अलग अलग प्रकार के कार्य पाए जाते हैं और प्रत्येक मसीही जन कुछ उपयोगी और अच्छा काम कर सकता है। प्रत्येक मसीही जन के पास करने के लिए एक योगदान होता है। प्रत्येक मसीही जन के पास सामर्थ्य या क्षमता का कम से कम एक क्षेत्र होगा। परन्तु किसी भी मसीही जन के पास सारी ही सामर्थ्य और सारी ही क्षमताएँ नहीं होंगी। कोई भी मसीही जन सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में अच्छा नहीं है। मसीही जनों को एक दूसरे के आत्मिक वरदानों या कार्यों की आवश्यकता होती है।

इसलिए, मसीही जनों को एक दूसरे के आत्मिक वरदानों या कार्यों का आदर करना चाहिए। और मसीही जनों को अन्यों की उन विशिष्ट आत्मिक क्षमताओं और सामर्थ्य का सम्मान करना चाहिए जो उनसे बेहतर हैं। फिलिप्पियों 2:3 के अनुसार, मसीही जनों को "अन्यों को अपने से बेहतर समझना" चाहिए। इसका अर्थ है कि मसीही जनों को इस क्षेत्र में उनकी तुलना में जो बेहतर हैं उनका सम्मान करना चाहिए। उनकी सामर्थ्य और कलीसिया में उनके द्वारा किए जाने वाले विशेष योगदान की सराहना करें। किसी भी कलीसिया में एक दूसरे की आलोचना करने या जो अन्य मसीही जन कलीसिया में करते हैं उसे तुच्छ समझने से बढ़ कर विनाशकारी कुछ भी नहीं है। परन्तु जब मसीही जन एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं और एक दूसरे की सामर्थ्य और क्षमताओं की सराहना करते हैं, तब कलीसिया उन्नति करती है और उसका निर्माण होता है।

12:17-21

प्रश्न 5. **पलटा लेने के बारे में बाइबल क्या शिक्षा देती है?**

ध्यान दें।

(1) मसीही जन कभी पलटा नहीं ले सकते।

वचन 17 कहता है, "बुराई के बदले किसी से बुराई न करो"। जबकि सरकार को बुराई करने वालों को दंड देना चाहिए (रोमियों 13:4), मसीही जन व्यवस्था को अपने हाथों में लेकर बुराई करने वालों को दंड नहीं दे सकते!

हालाँकि मसीही जन बुराई या अन्याय को सहते हैं, वे कभी पलटा नहीं ले सकते (रोमियों 12:19; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15; 1 पतरस 3:9)। इसके बजाए, मसीही जनों को वही काम करने के लिए सावधान रहना चाहिए जो हर एक जन की दृष्टि में सही हो (2 कुरिन्थियों 8:21)। उनको केवल उस पर ही ध्यान नहीं देना है जो परमेश्वर की दृष्टि में उचित है (मत्ती 5:20-48; लूका 6:27-37), परन्तु उस पर भी ध्यान देना है जो गैर मसीही जनों की दृष्टि में भी सही है (2 कुरिन्थियों 4:2; 1 तीमुथियुस 3:7)! जब मसीही जन आचरण के इन नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो वे मसीह पर तिरस्कार लाते हैं!

(2) मसीही जनों को हर एक जन के साथ मेल से रहना चाहिए।

वचन 18 कहता है, "जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो"। जो आपके विरोध में बुराई करते हैं उनके साथ मेल से रहने का अर्थ तीन बातें होती हैं:

- उनके साथ झगड़ा नहीं करना।
- उनके साथ टूटे सम्बन्ध को सही करने के लिए कठिन प्रयास करना।

- उनके साथ भलाई करना।

यह हमेशा सम्भव नहीं होता है। कई बार दूसरों का लगातार बना रहने वाला बुरा व्यवहार उनको आप के साथ मेल से नहीं रहने देने का कारण होता है। और कई बार अधिक सोच-विचार करना जैसे कि "दूसरों के पापों में भाग नहीं लेना" (1तीमुथियुस 5:22), दूसरों के आप को अस्वीकार करने और आप से घृणा करने का कारण हो सकता है, क्योंकि आप उनके पाप में भाग नहीं लेना चाहते हैं।

हालाँकि मसीही जन सब लोगों के साथ मेल से रहना चाहते हैं, उनका कर्तव्य दूसरे मसीही जनों के पाप को डाँटने और झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं का विरोध करना भी है।

(3) मसीही जनों को न्याय करना परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

यीशु मसीह। वचन 19 कहता है, "परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो"। लोगों का न्याय करना और उनको दंड देना केवल परमेश्वर के और उन लोगों के अधिकार में ही है जिनको परमेश्वर ने दंड देने का अधिकार प्रदान किया है। बाइबल में, परमेश्वर ने बुराई करने वाले लोगों को दंड देने का अधिकार निम्न लोगों को प्रदान किया है:

सरकार – किसी देश की सरकार के पास उनके देश में पाए जाने वाले सारे ही बुराई करने वाले लोगों को दंड देने का अधिकार और जिम्मेदारी है (रोमियों 13:3-4)। हालाँकि, उनका अधिकार सीमित है और उदाहरण के लिए उनके देश में रहने वाले नियमों का पालन करने वाले मसीही जनों को सताने के लिए उनके अधिकार को बढ़ाया नहीं जा सकता है (प्रेरितों के काम 4:19-20; 5:29).

अभिभावकों के पास अपने अपरिपक्व बच्चों को बुरे कामों का दंड देने का अधिकार और जिम्मेदारी है (नीतिवचन 3:11-12; 13:24; 19:18; 22:15; 23:13-14; 29:15,17; इब्रानियों 12:5-11)। हालाँकि, उनका अधिकार सीमित है। पिता लोग अपने बच्चों से हताश नहीं हो सकते हैं और उनके प्रति कड़वाहट से नहीं भर सकते हैं (इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21)।

स्थानीय कलीसिया के पास कलीसिया के अनुशासन[10] का अभ्यास उन मसीही सदस्यों के प्रति जो निरंतर बुरे काम करने में लगे रहते हैं (1 कुरिन्थियों 5:12-13; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14-15; 1 तीमुथियुस 5:20; तीतुस 3:10) और विश्वासियों के मध्य के विवादों का निर्णय करने का (1 कुरिन्थियों 6:1-8) अधिकार और जिम्मेदारी है।

व्यक्तिगत। परन्तु वे सभी व्यक्तिगत अन्याय जो दूसरों के हाथों से मसीही जन सहते हैं उनका उत्तर अनपेक्षित दया के साथ दिया जाना चाहिए (मत्ती 5:38-41) और जवाबी कार्रवाई करने का आग्रह परमेश्वर के चरणों में छोड़ देना चाहिए। जब लोगों ने यीशु का तिरस्कार किया, तो उसने जवाबी कार्रवाई नहीं की; जब उसे सताया गया, तो उसने कोई धमकी नहीं दी। इसके बजाए उसने अपने आप को उसे सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है" (1पतरस 2:21-23; तुलना करें भजन 37:5-13 से)!

(4) मसीही लोगों को भले काम करने के द्वारा बुराई पर जयवंत होना चाहिए।

वचन 20-21 कहता है, "बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो"। मसीही जनों को उस समय हतोत्साहित नहीं होना चाहिए जब अन्य लोग उन पर बुराई का ढेर लगाते हैं। इसके विपरीत, भले काम करने के द्वारा वे लोग शत्रुता को समाप्त करने और उन लोगों के बुरे कामों को रोकने के लिए परमेश्वर के उपकरण हैं जो उनको सताते हैं और उनके साथ बुरा व्यवहार

[10] देखें www.dota.net नियमावली 8, अध्याय 39

करते हैं। इस रीति से वे उनके सिर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएँगे। ऐसा शत्रु या तो दया के साथ कोमल हो जाएगा, या, यदि वह इतना क्रूर है कि कोई भी बात उसे मना नहीं सकती है, तो वह शर्मिन्दगी की एक जलती हुई भावना से ग्रस्त हो जाएगा और उस दया के कारण पछताएगा जो मसीही जन उस पर उंडेलते हैं।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 12:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 12:1-21 से सम्भव लागूकरण के उदाहरण।

12:1. अपनी देह के अंगों को परमेश्वर की सेवा में अपने पुनर्जीवित स्वभाव के साधनों के रूप में लगातार समर्पित करें।

12:1. अपनी देह को उन सब चीजों से अलग करें जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं और अपनी देह को उन चीजों को समर्पित करें जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं।

12:2. बुरे लोगों और प्रवृत्तियों की बाहरी अनुरूपता से बचें। इस बुरे युग के प्रतिरूप के सदृश्य होने की स्वयं को अनुमति न दें। आक्रामक भाषा बोलने, अपमानजनक गीत गाने, गंदी पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ने, अनैतिक फिल्में देखने, ललचाने वाले कपड़े पहनने, संदिग्ध खेलकूद में शामिल होने, और तथाकथित मित्रों की नास्तिकता और दुष्टता का अनुसरण करने से दूर रहें। जानबूझकर पाप से दूर हो जाएँ।

12:2. अपने आप को उस भीतरी बदलाव को समर्पित करें जो बाहरी बदलाव की ओर अगुवाई करता है। सक्रिय रूप से बदलाव की खोज करें, बाइबल में परमेश्वर की इच्छा की खोज करें, अपने मनों को परमेश्वर को वचनों से भरें और इस बात के इच्छुक बनें कि आप को बदलने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का उपयोग करे।

अपने स्वयं के विवेक, मान्यताओं और धारणाओं को लगातार वापस बाइबल स्कूल भेजें और पवित्र आत्मा की ओर से निर्देश प्राप्त करें। इस बात की जाँच करें कि क्या आप की धारणाएँ बाइबल के साथ अनुरूपता में हैं। मसीही विकास में उन्नति में स्थिर होने से इनकार करें। आत्म-संतुष्टि से लड़ें।

12:3. यह न सोचें कि आप के पास एक विशेष आत्मिक वरदान या कार्य है जब कि परमेश्वर ने आप को ऐसा कोई वरदान या कार्य नहीं सौंपा है। अतिश्योक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान का त्याग करें।

12:3. उस आत्मिक वरदान या कार्य का उपयोग करने से इनकार न करें जिसे परमेश्वर ने आप को सौंपा है। झूठी विनम्रता का त्याग करें।

12:5. इस बात को समझें और मान लें कि आप को दृढ़ रहने, उन्नति करें, सही से कार्य करने और परमेश्वर की सेवा करने के लिए अन्य मसीही जनों की आवश्यकता है। अस्वस्थ स्वतंत्रता का त्याग करें और स्वस्थ भीतरी निर्भरता का पोषण करें।

12:6. यदि आप के पास भविष्यद्वाणी करने का वरदान है, तो अतीत, वर्तमान या भविष्य के सत्कार के साथ बाइबल में लिखे हुए परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए इसका उपयोग करें।

12:8. यदि आप के पास दूसरों की आवश्यकताओं में योगदान करने का वरदान है, तो उन कारणों के लिए उदारता से दान दें जिससे आवश्यकता ग्रस्त लोगों को बड़ा फर्क पड़ेगा।

12:8. यदि आप के पास अगुवाई करने का वरदान है, तो लगन से शासन करें। परन्तु कभी भी एक सत्तावादी अगुवे न बनें (मत्ती 20:25-28)।

12:10. अन्य मसीही जनों का और उन वरदानों या कार्यों का आदर करें जो परमेश्वर ने उनको सौंपे हैं।

12:11. अपने कार्य को उत्साह और विश्वासयोग्यता के साथ करने से कभी न रुकें।

12:12. आनन्दित रहें क्योंकि परमेश्वर के वायदे भविष्य में अवश्य ही होने वाले हैं।

12:12. सताव में धीरज रखें, क्योंकि इससे प्रदर्शित होगा कि आप कठिन परिस्थितियों में भी प्रेम रखते हैं।

12:12. प्रार्थना में विश्वासयोग्य बनें, क्योंकि जो माँगता है उसे मिलता है, जो ढूँढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उसे खुला द्वार मिलता है।

12:13. आवश्यकता में पड़े अपने साथी मसीही जनों के साथ विशेष रूप से साझा करें। अतिथि-सत्कार का अभ्यास करें।

12:14. अपने सताने वाले लोगों को आशीष दो और जो आप के साथ बुरा बर्ताव करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो (लूका 6:27-28)।

12:15. सहानुभूति का विकास करें।

12:16. निम्न स्तर वाले लोगों के साथ मेलजोल रखने के इच्छुक बनें।

12:17-21. बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

2. रोमियों 12:1-21 से सम्भव लागूकरण के उदाहरण।

मैं इस बुरे संसार के बाहरी प्रतिमानों का अनुसरण करना नहीं चाहता। मैं नहीं चाहता कि यह बुरा संसार में अपने अपने साँचे में ढाले। इसके बजाए मैं अपने भीतरी मनुष्यत्व में बदलना, एक परिवर्तित मन पाना, परिवर्तित विवेक और परिवर्तित व्यवहार चाहता हूँ। इसलिए, मैं बुरी पत्रिकाओं को पढ़ने का या नास्तिक और दुष्ट लोगों के साथ अंतरंग शब्दों में शामिल होने से इनकार करूँगा। मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को जानने की खोज करना चाहता हूँ।

मैं अतिश्योक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान नहीं पाना चाहता हूँ, परन्तु बजाए इसके मैं अपना एक शुद्ध आकलन पाना चाहता हूँ। मैं अन्य मसीही जनों की सामर्थ्य की सराहना करना चाहता हूँ और कुछ विशेष क्षेत्रों में मुझसे बेहतर होने के लिए उनका आदर करना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 12:1-21 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30;

कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिये**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नदी करने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 12:1-21 का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 25, 29, 30 और 31** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।

   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। **(5) परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 20:1-16. में पाए जाने वाले "**दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त**" के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।